

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना और रामविलास शर्मा

*डॉ. महेंद्र प्रसाद कुशवाहा

*सहायक अध्यापक, हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, 221005

Received: February 6, 2026

Accepted: March 9, 2026

शोध सार

स्वतंत्रता के बाद हिंदी के सृजनात्मक साहित्य में चतुर्मुखी परिवर्तन हुआ। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं-कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि में भाषा, शिल्प, कथ्य, प्रस्तुति आदि कई स्तरों में परिवर्तन लक्षित किये गए। इस तरह के परिवर्तन से साहित्य में जो बदलाव आया उसके मूल्यांकन के लिए आलोचना के नये मान-मूल्यों और प्रतिमान की आवश्यकता हुई। परिणामतः इस युग में आकार आलोचना का कई स्तरों में विकास हुआ, खासकर १९३६ ई. से चली आती हुई मार्क्सवादी आलोचना का। समाजवादी विचारधारा को केंद्र में रखकर चलने वाली इस आलोचना धारा का सर्वोत्कृष्ट रूप हमें इसी युग में मिलता है। रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, मुकबोध, मैनेजर पाण्डेय जैसे प्रखर मार्क्सवादी आलोचक इसी आलोचना की देन हैं।

बीज शब्द : मार्क्सवादी आलोचना, कविता के प्रतिमान, हिंदी नवजागरण, जातीय साहित्यिक परम्परा

स्वतंत्रता के बाद हिंदी के सृजनात्मक साहित्य में चतुर्मुखी परिवर्तन हुआ। साहित्य की प्रायः सभी विधाओं-कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि में भाषा, शिल्प, कथ्य, प्रस्तुति आदि कई स्तरों में परिवर्तन लक्षित किये गए। इस तरह के परिवर्तन से साहित्य में जो बदलाव आया उसके मूल्यांकन के लिए आलोचना के नए मान-मूल्यों और प्रतिमान की आवश्यकता हुई। परिणामतः इस युग में आकार आलोचना का कई स्तरों में विकास हुआ, खासकर १९३६ ई. से चली आती हुई मार्क्सवादी आलोचना का। समाजवादी विचारधारा को केंद्र में रखकर चलने वाली इस आलोचना धारा का सर्वोत्कृष्ट रूप हमें इसी युग में मिलता है। रामविलास शर्मा, नामवर सिंह, मुकबोध, मैनेजर पाण्डेय जैसे प्रखर मार्क्सवादी आलोचक इसी आलोचना की देन हैं। वैसे तो मार्क्सवादी आलोचना के शिखर पुरुष के रूप में ख्यात रामविलास जी की आलोचना की शुरुआत ४० के दशक में ही हो जाती है, किन्तु उनकी ज्यादातर आलोचना, जो उनकी ख्याति का आधार

रही हैं, का प्रकाशन इसी युग में आकार होता है। वे हिंदी के एक मात्र आलोचक हैं जिन्होंने नए और पुराने साहित्य का समान भाव से मूल्यांकन किया है। नये साहित्यकारों के साथ-साथ पुराने साहित्यकारों पर भी सामान्य रूप से उन्होंने लिखा है। कालिदास से लेकर अपने समकालीन कवियों तक उन्होंने समान भाव से लिखा है। उनका लेखन व्यापक रहा है। हिंदी में उनसे ज्यादा किसी आलोचक ने नहीं लिखा है। उन्होंने अपने जीवन का सर्वाधिक हिस्सा साहित्य-साधना को समर्पित किया है, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी आलोचना को 'प्रेमचंद' (१९४९), 'भारतेन्दु-युग' (१९४३), 'निराला' (१९४६), 'प्रगति और परंपरा' (१९४९), 'साहित्य और संस्कृति' (१९४९), 'प्रेमचंद और उनका युग' (१९५२), 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' (१९५३), 'भाषा साहित्य और संस्कृति' (१९५४), 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ' (१९५४), 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना' (१९५५), 'लोकजीवन और साहित्य' (१९५५), 'स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य' (१९५६), 'मानव सभ्यता का विकास' (१९५६), 'आस्था और सौंदर्य' (१९६१), 'भाषा और समाज' (१९६१), 'भारत की भाषा समस्या' (१९६५), 'साहित्य : स्थायी मूल्य और मूल्यांकन' (१९६८), 'निराला की साहित्य साधना (तीन खंड-१९६९, १९७२, और १९७६ ई. में), 'भारतेन्दु युग और हिंदी साहित्य की विकास परंपरा' (१९७५), 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदनवजागरण' (१९७७), 'नयी कविता और अस्तित्ववाद' (१९७८), 'भारत के प्राचीनभाषा परिवार और हिंदी' (तीन खंड-१९७९, १९८०, और १९८१ ई० में), 'परंपरा का मूल्यांकन' (१९८१), 'भाषा : युगबोध और कविता' (१९८१), 'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद' (दो खंड-१९८२), 'कथा विवेचना और गद्य शिल्प' (१९८१), 'मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य' (१९८४), 'लोकजागरण और हिंदी

साहित्य' (सम्पादित, १९८५), 'हिंदी जाति का साहित्य' (१९८६), 'भारतीय साहित्यके इतिहास की समस्याएँ' (१९८६), 'मार्क्स और पिछड़े हुए समाज' (१९८६), 'सनसंतावन की राज्य क्रांति और मार्क्सवाद' (प्र० सं० १९५७, दि० सं०-१९९०) आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ हिंदी साहित्य को मिलीं। ये कृतियाँ न केवल रामविलास जीकी उपलब्धियाँ हैं, बल्कि हिंदी आलोचना की उपलब्धियाँ हैं। इतना ही नहीं, वे ऐसे मनीषी थे जिन्होंने जितनी साहित्य की पुस्तकें लिखी हैं, उतनी ही साहित्येतर भी। इन पुस्तकों में 'स्वाधीनता संग्राम के बदलते परिदृश्य' (१९९२), 'भारतीय साहित्य और भावितवाद' (१९९२), 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद' (१९९४), 'भारतीय साहित्य की भूमिका' (१९९६), 'भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश' (दो खण्डों में १९९९), 'गाँधी, अम्बेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ' (२०००), 'भारतीय सौन्दर्यबोध और तुलसीदास' (२००१) आदि महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा 'घर की बात' और 'अपनी धरती अपने लोग' (तीन खण्डों में १९९० ई०) शीर्षक से उनकी आत्मकथा भी प्रकाशित है। उपर्युक्त पुस्तकों से स्पष्ट है कि उन्होंने आलोचन-साहित्य, भाषा विज्ञान, दर्शनशास्त्र, इतिहास, कथा-साहित्य आदि सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है, जिससे हिंदी साहित्यसमुद्र हुआ है। हिंदी आलोचना में शुरू से लेकर आज तक एक भी आलोचक नहीं हुआ है, जिसने इतनी संख्या में पुस्तकें लिखी हों। हिंदी आलोचना के वे एकमात्र आलोचक हैं जिनका लेखन इतना विपुल है। दृढ़ता, ईमानदारी, निर्भीकता और वैयक्तिक पारदर्शिता उनके लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है। हिंदी आलोचना की लम्बी परंपरा में उनके लेखन को यदि खारिज कर दिया जाय तो भारतेन्दु, निराला, प्रेमचंद,

महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल और किशोरीदास वाजपेयी के महत्व से हिंदी भाषा और समाज वंचित रह जायेगा। इसके साथ-साथ 'हिंदी जाति की अवधारणा' से भी हिंदी साहित्य और समाज वंचित रह जायेगा। भारतेन्दु आधुनिकता के प्रवर्तक हैं, निराला महाकवि हैं, प्रेमचंद महान उपन्यासकार हैं, रामचंद्र शुक्ल सर्वश्रेष्ठ आलोचक हैं, किशोरीदास वाजपेयी विश्व स्तर के वैयाकरण हैं। इन सब का समुचित मूल्यांकन कर इनकी महत्ता को हिंदी समाज के सामने रखने का श्रेय रामविलास जी को जाता है। रामविलास जी को छोड़कर शेष हिंदी समाज ने इनका मूल्यांकन कैसा किया है, यह सर्वविदित है। रामविलास जी के निष्कर्षों से हम सहमत या असहमत हो सकते हैं, बावजूद इसके उनके द्वारा विवेचित-विश्लेषित विषयों को नजरंदाज नहीं किया जा सकता है। यही उनकी आलोचना की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनके भारतेन्दु, प्रेमचंद, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, किशोरीदास वाजपेयी, वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, तुलसीदास आदि निजी उनके हैं और अभूतपूर्व हैं। उन्होंने इनपर जो और जैसा भी लिखा, आज भी वह बिल्कुल वैसा ही है। रामविलास जी को यह भी श्रेय जाता है कि उन्होंने “परंपरा का उचित मूल्यांकन करके प्रगतिशील समीक्षा को जातीय साहित्य परंपरा से जोड़ा है।” प्रसिद्ध आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी के दृष्टि में “रामविलास शर्मा का श्रेष्ठतम अध्ययन महावीर प्रसाद द्विवेदी को लेकर है, और इस बात का भी श्रेय उन्हें जाता है कि भारतेन्दु हरिश्चंद्र के कृतित्व को वे अनेक विक्षमों से खींचकर केंद्र में लाये। कबीर की तरह ही भारतेन्दु भी बहुत समय तक लेखक कम और समाज सुधारक अधिक माने जाते थे। उन्हें आधुनिक साहित्य चेतना के केंद्र में स्थापित करना रामविलास जी का काम है, वैसे ही जैसे जायसी और कबीर के कवि रूप का संधान क्रमशः रामचंद्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी ने किया है।” इतना ही नहीं, महावीर प्रसाद द्विवेदी की काबिलियत के प्रकाश में लाने, निराला के कवि रूप का सही अनुसंधान और रामचंद्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि का सही-सही मूल्यांकन आदि का श्रेय रामविलास जी को ही जाता है। उनकी दृष्टि में हिंदी के ये चार स्तंभ हिंदी नवजागरण के चार चरण हैं। उन्हीं के शब्दों में “सन १८७७ का प्रथम स्वाधीनता संग्राम हिंदी नवजागरण की पहली मंजिल है। दूसरी मंजिल भारतेन्दु हरिश्चंद्र का युग है। हिंदी नवजागरण का तीसरा चरण महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके सहयोगियों का कार्यकाल है। हिंदी नवजागरण के सन्दर्भ में निराला का यह लेखन महावीर प्रसाद द्विवेदी के ही कार्य की अगली कड़ी है।” जिस प्रकार स्पष्ट रूप से न कह कर भी रामविलास जी ने निराला को यहाँ हिंदी नवजागरण का चौथा चरण माना है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष रूप में भले उन्होंने यह नहीं लिखा हो कि रामचंद्र शुक्ल हिंदी नवजागरण के अगले चरण हैं, पर परोक्ष रूप में उन्होंने इसे स्वीकार किया है। तभी तो वे रामचंद्र शुक्ल का महत्व हिंदी साहित्य में वैसा ही मानते हैं जैसा उपन्यासकार प्रेमचंद और कवि निराला का। उनके ही शब्दों में “हिंदी साहित्य में शुक्ल जी का वही महत्व है जो उपन्यासकार प्रेमचंद या कवि निराला का। उन्होंने आलोचना के माध्यम से उसी सामंती संस्कृति का विरोध किया जिसका उपन्यास और कविता के माध्यम से प्रेमचंद और निराला ने। शुक्ल जी ने न तो भारत के रूढ़िवाद को स्वीकार किया, न पश्चिम के व्यक्तित्ववाद को। उन्होंने बांध जगत और मानव-जीवन की वास्तविकता के आधार पर साहित्य-सिद्धांतों की स्थापना की और उनके आधार पर सामंती साहित्य का विरोध किया और देशभक्ति और जनतंत्र की साहित्यिक परंपरा का समर्थन किया।” यही कारण है कि रामचंद्र

शुक्ल रामविलास जी के प्रिय आलोचक हैं। कवियों में जितना निराला और उपन्यासकारों में जितना प्रेमचंद उनके प्रिय हैं, आलोचकों में उतना ही रामचंद्र शुक्ल उनके प्रिय हैं। वैसे तो रामचंद्र शुक्ल हिन्दी शुक्लयुगीन आलोचना के बाद के प्रायः सभी आलोचकों के प्रिय रहे हैं, पर रामविलास जी उन आलोचकों से थोड़ा भिन्न हैं। उन्होंने अपनी आलोचना का विकास शुक्ल जी की आलोचना से किया है। उनकी आलोचना का प्रस्थान बिंदु आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना है। वे आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना से पूर्णतः सहमत हैं। परिणामतः वे अपनी आलोचना-यात्रा में भी आचार्य रामचंद्र शुक्ल के साथ सहायत्री के रूप में विचार करते हैं। उन्होंने अपनी आलोचना के द्वारा रामचंद्र शुक्ल की आलोचना-परंपरा का विकास किया है।

रामविलास शर्मा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना के सबसे बड़े आलोचक माने जाते हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी आलोचना के विकास में उनका योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपनी समस्त कृतियों में मार्क्सवादी दृष्टि से विचार किया है। उनका "आलोचना-कर्म हिन्दी में प्रगतिवादी विचारधारा के एक प्रमुख प्रवक्ता के रूप में होता है। पर क्रमशः उनके लेखन में 'वाद' का आग्रह हल्का होता जाता है और 'विवेचन' प्रधान।" परिणामतः उन्हें आचार्य रामचंद्र शुक्ल का सच्चा उत्तराधिकारी समझा जाता है। जिस प्रकार अपनी प्रखर आलोचना-दृष्टि से आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तुलसी, जायसी और सूर पर विस्तृत आलोचना लिखकर मध्यकालीन साहित्य की प्रगतिशील परंपरा का अनुसन्धान किया था, उसी प्रकार रामविलास शर्मा ने अपनी प्रखर मेधा और आलोचना-दृष्टि से भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, निराला और रामचंद्र शुक्ल पर लिखकर आधुनिककाल की प्रगतिशील परंपरा का अनुसन्धान किया है। रामविलास जी मुख्य रूप से आधुनिक साहित्य के आलोचक माने जाते हैं, बावजूद इसके उन्होंने कालिदास, तुलसीदास, भवभूति आदि का जो मूल्यांकन किया है, वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। भवभूति, कालिदास, तुलसीदास आदि को उन्होंने अपनी आलोचना क्षेत्र में शामिल कर अपनी आलोचना को विस्तृत आयाम दिया है। उन्होंने इसके माध्यम से हिन्दी की साहित्यिक परंपरा का उचित मूल्यांकन करते हुए मार्क्सवादी आलोचना को हिन्दी की जातीय साहित्यिक परंपरा से जोड़ा है। वैसे तो मार्क्सवादी आलोचना की शुरुआत तो रामविलास जी आगमन के पूर्व ही चुका था, किन्तु उसका सृजनात्मक विस्फोट उनके आगमन के बाद ही हुआ है। उन्होंने अपनी आलोचना-दृष्टि और प्रखर विवेक से हिन्दी भाषा और साहित्य की गौरवमयी परंपरा को तार्किकता से हिन्दी समाज के सामने लाया है। वे पहले मार्क्सवादी आलोचक हैं, जिन्होंने एक प्रकार से आधुनिक हिन्दी साहित्य के सभी विशिष्ट रचनाकारों, साहित्यिक प्रवृत्तियों और इतिहास के विभिन्न मोड़ों पर कुशल सामर्थ्य के साथ लिखा है। भारतीय परंपरा के मूल स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए वे 'आदिकाव्या- भवभूति की करुणा', साहित्य में रूपयी मूल्यों की समस्या', 'कालिदास' जैसे चिंतन प्रधान निबंध लिखते रहे हैं।

प्रेमचंद, निराला और आचार्य रामचंद्र शुक्ल रामविलास जी के प्रिय साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने अपने एक निबंध में लिखा है "क्या साहित्य में प्रेमचंद, आलोचना में रामचंद्र शुक्ल और कविता में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ये तीनों विभूतियाँ एक-दूसरे के पूरक हैं।" अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना' के चतुर्थ संस्करण की भूमिका में उन्होंने इसके पूरकता के कारण को स्पष्ट किया है। तीनों ही

साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामंती संस्कृति का विरोध किया है। यही कारण है कि ये तीनों रामविलास जी के प्रिय साहित्यकार हैं। प्रिय साहित्यकार होने के नाते ही रामविलास जी ने सबसे अधिक इन्हीं साहित्यकारों पर लिखा है। सब पर स्वतंत्र पुस्तक की रचना उन्होंने की है। निराला पर लिखित तीन खंडों में 'निराला की साहित्य साधना' निराला पर लिखे गए सारे ग्रंथों में से श्रेष्ठ माना जाता है। यह रामविलास जी की भी उत्कृष्ट आलोचनात्मक कृति है, खासकर दूसरा खंड जिसमें उन्होंने निराला के साहित्य का सम्यक मूल्यांकन किया है। 'निराला की साहित्य साधना' में “कवि की सृजनात्मक कल्पना को उसकी अनेक रचनाओं की रचना-प्रक्रिया को, कवि-व्यक्तित्व की दृष्टि से समझा गया है। निराला के जीवन के उस रहस्यमय खंड का जिसे उनकी विधिस मनःस्थिति कहा जा रहा है, अत्यंत सूक्ष्म और गहरा अध्ययन करके डॉ. शर्मा ने उनके साहित्यिक मर्म से जोड़ने का प्रयत्न किया है। हिंदी में साहित्यकारों के 'व्यक्तित्व और कृतित्व' सम्बन्धी अध्ययनों की कमी नहीं, परन्तु ऐसा अध्ययन जिसमें ये दोनों अलग खानों में बंटे न रहकर एक इकाई बन जाय, एक की समझ दूसरे के मूल्यांकन में सहायक बन जाय, और एक के सही ज्ञान के लिए दोनों की पारस्परिकता का ज्ञान अपरिहार्य प्रतीत होने लगे, इस ग्रन्थ से पहले देखने में नहीं आया।” इस प्रकार देखा जाय तो प्रेमचंद, निराला और आचार्य रामचंद्र शुक्ल पर उनका काम महत्वपूर्ण है। बाद में जब उनकी आलोचना के दायरे में 'हिंदी नवजागरण' और 'हिंदी जाति' की अवधारणा आयी तो उन्होंने अपने प्रिय रचनाकारों की लिस्ट में भारतेन्दु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी को भी ले लिया। फलस्वरूप 'भारतेन्दु युग', 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण' जैसी उत्कृष्ट आलोचनात्मक कृतियाँ हिंदी जगत को मिलीं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद हिंदी की आलोचना को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले आलोचक रामविलास शर्मा हैं। ये सच्चे अर्थों में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के उत्तराधिकारी हैं। स्वतन्त्रोत्तर हिंदी आलोचना को सर्वाधिक उन्होंने ही प्रभावित किया है। उन्होंने अपनी आलोचना-दृष्टि और विवेक के सहारे हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना को शिखरतक पहुँचाया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना-दृष्टि को विकसित, परिष्कृत, और व्याख्यायित करते हुए उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना को नया आयाम प्रदान किया है। रामचंद्र शुक्ल की आलोचना का विरोध करने की बजाय उन्होंने उनके विचारों की पुष्टि करते हुए उनकी पुनर्व्याख्या की और युगानुरूप उसका विस्तार भी किया है। उन्होंने जिस साहित्यकार पर विचार किया, समग्रता में किया है; बिल्कुल अपने प्रिय और आदर्श आलोचक रामचंद्रशुक्ल की तरह। भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला, प्रेमचंद और आचार्यरामचंद्र शुक्ल इसके उदाहरण हैं। नन्दकिशोर नवल के शब्दों में “उन्होंने हिंदी की प्रगतिशील साहित्यिक परंपरा की व्याख्या की है और बताया है कि यह परंपरा जितनी जातीय है, उतनी ही राष्ट्रीय भी। उनके पहले हिंदी आलोचना वस्तुतः कविता की ही आलोचना थी। उन्होंने कविता, कथा साहित्य, नाटक और आलोचना इन सबों की आलोचना की है।” अतः ये स्वातंत्र्योत्तर हिंदी आलोचना के सर्वप्रमुख आलोचक हैं।

सन्दर्भ:

१. विधनाथत्रिपाठी, हिंदीसाहित्यकाइतिहास : सामान्यपरिचय; एल.सी.ई.आर.टी., पृष्ठ-११९.
२. रामस्वरूपचतुर्वेदी, हिंदीसाहित्यऔरसंवेदनाकाविकास; पृष्ठ-२२६
३. रामविलासशर्मा, महावीरप्रसादद्विवेदीऔरहिंदीनवजागरण; पृष्ठ-१५ (भूमिका)
४. रामविलासशर्मा, आचार्यरामचंद्रशुक्लऔरहिंदीआलोचना; पृष्ठ-२७ (चतुर्थसंस्करणकीभूमिकासे)
५. रामस्वरूपचतुर्वेदी, हिंदीसाहित्यऔरसंवेदनाकाविकास; पृष्ठ- २२५
६. निर्मलाजैन, हिंदीआलोचनाकीबीसवींसदी; पृष्ठ-७१
७. नन्दकिशोरनवल, हिंदीआलोचनाकाविकास; पृष्ठ-२७६.

